भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-1966

उत्तर देने की तारीख-05/08/2026

एनसीईआरटी पाठ्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों का समावेश

1966 **श्री बीरेन्द्र प्रसाद बैश्य**:

क्या ***शिक्षा*** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार देशभर के विद्यार्थियों को पूर्वोत्तर क्षेत्र की व्यापक समझ प्रदान करने के उद्देश्य से एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम में पूर्वोत्तर राज्यों के इतिहास, संस्कृति एवं विरासत को समुचित रूप से शामिल करने पर विचार कर रही है;

(ख) क्या सरकार ने इस संबंध में देशभर के विद्यार्थियों के बीच पूर्वोत्तर क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता के मद्देनज़र कोई परामर्श प्रक्रिया प्रारंभ की है अथवा कोई कदम उठाए हैं; और

(ग) क्या सरकार ने इस उद्देश्य से पूर्वोत्तर राज्यों के इतिहासकारों, विद्वानों, शिक्षाविदों तथा विषय- विशेषज्ञों के साथ परामर्श किया है अथवा ऐसा परामर्श आयोजित करने का विचार है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री जयन्त चौधरी)

(क) से (ग): राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफएसई) 2023 के मार्गदर्शक सिद्धांत सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। नीति दस्तावेज में सभी पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और नीति में विविधता और स्थानीय संदर्भ के सम्मान का भी उल्लेख किया गया है। इसके अलावा, नीति में उल्लिखित है कि "भारत के ज्ञान" में प्राचीन भारत के ज्ञान और आधुनिक भारत में इसके योगदान तथा इसकी सफलताओं तथा चुनौतियों का ज्ञान शामिल होगा, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के संबंध में भारत की भविष्य की आकांक्षाओं की स्पष्ट समझ शामिल होगी। इन तत्वों को पूरे स्कूल पाठ्यक्रम में सटीक और वैज्ञानिक तरीके

से, जहां भी प्रासंगिक हो शामिल किया जाएगा; विशेष रूप से, भारतीय ज्ञान प्रणालियों, जिनमें जनजातीय ज्ञान और अधिगम के स्वदेशी और पारंपरिक तरीके शामिल हैं, को समाहित किया जाएगा और गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, खेल के साथ-साथ शासन, राजनीति, संरक्षण में शामिल किया जाएगा। नीति में बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति का भी उल्लेख है, जिससे पूर्वोत्तर सहित भाषाओं की विविधता का सम्मान किया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुवर्ती रूप में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने पूर्वोत्तर राज्यों सहित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में जिला-स्तरीय परामर्श आयोजित किए, ताकि इस बात पर विचार किया जा सके कि एनईपी 2020 के दृष्टिकोण और सिफारिशों को प्रारंभिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ-एफएस) और स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ-एसई) में कैसे अनुवादित किया जा सकता है। पूर्वोत्तर राज्यों सहित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में राज्य फोकस समूह भी गठित किए गए थे। इन राज्य फोकस समूहों ने स्थिति पत्र विकसित किए, जिन्होंने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के विकास में योगदान दिया और सूचित किया। एनसीएफ-एसई 2023 संपूर्ण भारत में मौजूद सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की विशाल विविधता को चिन्हित करता है। यह इस बात पर जोर देता है कि स्थानीय कला और संस्कृतियों को स्कूल शिक्षा के सभी चरणों में कला शिक्षा के लिए प्रारंभिक बिंदु के रूप में काम करना चाहिए।

एनसीएफ-एसई 2023 के अनुसार, एनसीईआरटी ने नई पाठ्यपुस्तकें विकसित की हैं, जिनमें विशेष रूप से कक्षा 1 से 8 तक, देशभर के छात्रों के बीच क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के इतिहास, संस्कृति, परंपराओं, कला, विरासत और योगदान के संदर्भ शामिल हैं। एनसीईआरटी ने कक्षा 6 आर3 भाषा पाठ्यपुस्तकें और कक्षा 9 के लिए असमिया, बोडो, मणिपुरी आदि सहित 22 भाषाओं में आयु-अनुरूप शिक्षण सामग्री प्रकाशित की है, जो पूर्वोत्तर राज्यों की संस्कृति को दर्शाती हैं।

एनसीईआरटी सांस्कृतिक जुड़ाव, भारतीय ज्ञान प्रणाली और एनईपी 2020 और एनसीएफ-एसई 2023 के पाठ्यचर्या परिप्रेक्ष्य के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए उत्तर-पूर्वी राज्यों सहित राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में क्षमता-निर्माण कार्यक्रम भी संचालित कर रहा है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति तथा पाठ्यचर्या क्षेत्र समूहों में पूर्वोत्तर राज्यों से एनसीईआरटी संकाय सदस्यों सहित विशेषज्ञों/विद्वानों का प्रतिनिधित्व शामिल है।

*****